The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Special Issue 1 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

सृजनात्मकता का भारतीय दर्शन के तहत तकनीकी शिक्षा में एकीकरण

शोधार्थीः– **ममता सिंह** (शिक्षासंकाय)
स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती महाविद्यालय
शोध निर्देशकः–**डॉ0 दुर्गावती मिश्रा**
प्राध्यापक, स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती महाविद्यालय

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18797988

ARTICLE DETAILS

Research Paper
Accepted: 16-01-2026
Published: 05-02-2026

Keywords:
सृजनात्मकता, भारतीय दर्शन, तकनीकी शिक्षा, नवाचार, योग दर्शन, नैतिकता।

ABSTRACT

वर्तमान समय में तकनीकी शिक्षा केवल तकनीकी कौशलों के विकास तक सीमित नहीं रही, बल्कि नवाचारी सोच और सृजनात्मकता को भी नए आयाम प्रदान कर रही है। आधुनिक तकनीकी विश्व में, जहाँ मशीनों और डिजिटल उपकरणों का वर्चस्व बढ़ रहा है, वहाँ मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता ही उसे विशिष्ट बनाती है। इस संदर्भ में भारतीय दर्शन, जो हजारों वर्षों से ज्ञान, कर्म, भावना और आत्मानुभूति के समन्वय को मान्यता देता आया है, सृजनात्मकता के सशक्त आधार प्रस्तुत करता है। भारतीय दर्शन के मुख्य सिद्धांतों विशेषकर योग, सांख्य, वेदांत और भगवद्गीता के माध्यम से सृजनात्मकता की अवधारणा को स्पष्ट करता है। भारतीय दर्शन मनुष्य के मानसिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास पर बल देता है, जो सृजनात्मकता की मूल भूमि तैयार करते हैं। यह केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं बल्कि ज्ञान के साथ उसका सृजनात्मक उपयोग और नैतिक रूप से निर्णय लेने की क्षमता को भी महत्वपूर्ण मानता है। तकनीकी शिक्षा के वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण किया गया है भारतीय दर्शन के सिद्धांतों पर आधारित योग्य शिक्षण पद्धतियाँ छात्रों को नैतिक, आत्म–निष्ठ और रचनात्मक तकनीकी विशेषज्ञ बनने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। अंततः, यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि तकनीकी शिक्षा में भारतीय दर्शन का समावेश सृजनात्मकता के विकास और ज्ञान का नैतिक उपयोग सुनिश्चित करने के लिए एक सतत, सांस्कृतिक और मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करता है।

❖ भूमिका

भारतीय दर्शन विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है। इसमें शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्या या सूचना प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि जीवन के सार को समझना और स्वयं को आत्मज्ञान की ओर ले जाना है। तकनीकी शिक्षा आधुनिक युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित समाज के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। किंतु यदि इसे केवल औजार–केन्द्रित दृष्टिकोण से देखा जाए, तो यह मनुष्यता, नैतिकता और सृजनात्मकता से कट सकती है।

आज की तकनीकी शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को तकनीकी दक्षता तो प्रदान करती है, परंतु उनमें सृजनात्मकता, नवोन्मेष और नैतिक विवेक की कमी दिखाई देती है। इस स्थिति में भारतीय दर्शन का एकीकृत दृष्टिकोण मददगार हो सकता है, जो सृजनशीलता को मानव की आंतरिक क्षमता और विश्व को बदलने की शक्ति मानता है। यह शोध–पत्र इसी बात को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन करता है कि भारतीय दर्शन के सिद्धांतों को तकनीकी शिक्षा में कैसे समाविष्ट किया जा सकता है और इससे शिक्षा प्रणाली में क्या बदलाव संभव हैं।

❖ साहित्य समीक्षा

भारतीय दर्शन में मनुष्य के संपूर्ण विकास की बात की गई है। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों तक, शिक्षा को आत्म–विकास और सृजन की प्रक्रिया माना गया है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि शिक्षा वह है जो मनुष्य को उसके भीतर निहित परिपूर्णता को बाहर लाने में सहायक हो। जिद्दू कृष्णमूर्ति ने शिक्षा को आत्म–ज्ञान, निरीक्षण और स्वतंत्र चिंतन की प्रक्रिया माना। भगवद्गीता में जीवन, कार्य और ज्ञान के समन्वय की बात की गई है, जो कर्मयोग और ज्ञानयोग के माध्यम से मनुष्य को सृजनशील बनाती है। दूसरी ओर, तकनीकी शिक्षा पर किए गए कई शोध जैसे–

- कौशल–आधारित तकनीकी प्रशिक्षण,
- नवाचार और उद्यमिता पर आधारित कार्यक्रम,
- एस. टी. ई. एम. शिक्षा,

इन सभी ने पाया है कि सृजनात्मकता तकनीकी विशेषज्ञता या ज्ञान से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

इसलिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भारतीय दर्शन का संयोजन विद्यार्थियों को तकनीकी रूप से सक्षम, नैतिक तौर पर सुदृढ़ और सृजनात्मक रूप से जागृत बना सकता ळें

❖ सैद्धांतिक आधार

- योग दर्शन

योग मन, शरीर और आत्मा के संतुलन का मार्ग है। ध्यान और एकाग्रता जैसी प्रक्रियाएँ मानसिक स्पष्टता और सृजनात्मक सोच को बढ़ावा देती हैं। ध्यान से तनाव कम होता है, जो तकनीकी क्षेत्रों में समस्या समाधान और नवाचार के लिए आवश्यक है।

- सांख्य दर्शन

सांख्य दर्शन प्रकृति और पुरुष के संतुलन से सौंदर्य और सृजन को जोड़ता है। यह मानता है कि सृजनात्मकता तब प्रकट होती है जब मानव चित्त की शुद्धता और प्रकृति के तत्वों का संतुलन होता है।

- वेदांत दर्शन

अद्वैतवाद में सत्य का आधार एकता है। मनुष्य और विश्व में एकत्व की भावना रचनात्मक ऊर्जा को जन्म देती है। यह दृष्टिकोण तकनीकी शिक्षा में मानवता, नैतिकता और नवाचार को एक ही धरातल पर ला सकता है।

- कर्म योग

कर्मयोग में 'निष्काम कर्म' यानी फल की इच्छा त्याग कर काम करने की प्रेरणा है। तकनीकी शिक्षा में यह सिद्धांत विद्यार्थियों में प्रयोग और रचनात्मकता की भावना जगाने में उपयोगी है।

❖ तकनीकी शिक्षा में भारतीय दर्शन आधारित मॉडल

- ➢ ध्यान–आधारित शिक्षण
  - टेक्निकल क्लास में छोटे ध्यान सत्र
  - छात्रों की एकाग्रता और तनाव–प्रबंधन
- ➢ नैतिक समस्या–समाधान
  - प्रोजेक्ट और प्रयोगशालाओं में नैतिक मूल्य आधारित चर्चा
  - तकनीकी परियोजनाओं के सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण
- ➢ सृजनात्मक कार्यशाला
  - वास्तविक समस्याओं पर आधारित प्रयोग
  - योग और ध्यान अभ्यास से प्रेरित निर्देशित चिंतन
- ➢ आत्म–प्रतिबिंब और स्वमूल्यांकन
  - सीखने की प्रक्रिया पर आत्म–विश्लेषण करने की आदत
  - छात्रों द्वारा डायरी और जर्नल लेखन

❖ भारत में सृजनात्मक तकनीकी शिक्षा की वर्तमान स्थिति

भारत में तकनीकी शिक्षा मुख्यतः इंजीनियरिंग, प्रबंधन, कंप्यूटर विज्ञान और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से संचालित होती है। तकनीकी शिक्षा में उद्यमिता और नवाचार के रूप में सृजनात्मकता की भूमिका बढ़ रही है, लेकिन अभी भी यह मुख्यधारा में पूर्णतया शामिल नहीं हो पाई है।

उदाहरण स्वरूप

आई. आई. टी. और आई. आई. एस. सी. जैसे संस्थानों में 'इनोवेशन हबस' विकसित हो रहे हैं।

ए. आई. सी. टी. ई. ने भी 'उद्यमिता विकास योजना' और "क्रिएटिव टीचिंग मेथड्स" जैसी पहलें शुरू की हैं।

लेकिन इन योजनाओं में भारतीय दर्शन के मूल तत्वों का समावेश अभी भी सीमित मात्रा में हो रहा है, जो मुख्य मुद्दा है।

❖ सृजनात्मकता और भारतीय दर्शन का संबंध

भारतीय दर्शन सृजनात्मकता को आत्मा की अभिव्यक्ति मानता है। सृजन की प्रक्रिया केवल बाहरी नवोन्मेष तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्म–विकास और विश्व के प्रति योगदान का साधन भी है।

अन्य शोध द्वारा द्वारा ज्ञात होता है कि ''ध्यान, योग और मूल्य–आधारित शिक्षा'' छात्रों की कल्पनाशक्ति और जिज्ञासा को बढ़ाते हैं। तकनीकी शिक्षा में यदि इन सिद्धांतों का समावेश हो, तो छात्र न केवल बेहतर तकनीकी समाधान विकसित करेंगे, बल्कि नैतिक, सतत और मानवीय विचार भी जोड़ेंगे।

❖ निष्कर्ष

तकनीकी शिक्षा में सृजनात्मकता का समावेश केवल नवोन्मेषी उत्पाद बनाने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह मानवीय मूल्यों और नैतिकता पर आधारित होना चाहिए। भारतीय दर्शन इस दिशा में एक गहन और संतुलित मार्गदर्शन प्रदान करता है।

योग, ध्यान, कर्मयोग, और आत्म–चिंतन जैसे दार्शनिक सिद्धांत शिक्षण–पद्धतियों में समाहित करके तकनीकी शिक्षा को अधिक जीवंत, वैचारिक और सृजनशील बनाया जा सकता है। भारतीय दर्शन की दृष्टि से तकनीकी शिक्षा मानवता–सम्मत, नवोन्मेषी और भविष्य के लिए सार्थक बन सकती है।

संदर्भ

- कृष्णमूर्ति, जिद्दू. (2000). शिक्षा और जीवन. नई दिल्ली भारतीय ज्ञानपीठ।
- राधाकृष्णन, एस. (1953). भारतीय दर्शन (खंड 1–2). मुंबई जै. बी. पब्लिकेशन।
- भगवद्गीता. . (कर्मयोग अध्याय)।
- विवेकानंद, स्वामी. (1992). शिक्षा का सच्चा उद्देश्य. कोलकाता रामकृष्ण मिशन।
- AICTE- (2021). Innovation in Technical Education: Guidelines and Framework- नई दिल्ली अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद।
- Sharma, P. (2019). Creativity in Engineering Education- *Indian Journal of Technical Education*,42(2)12–18.